ॐ Date ☐☐ ☐☐ ☐☐☐☐

25/1/2009
रविवार

स्त्री शकती की सामुहिकता (आगम)

सभी परमात्माओं को मेरा नमस्कार - - -
इस "स्त्री शकती अनुष्ठान" मे प्रत्येक स्त्री शकती को अपने आप को जानना अत्यंन्त आवश्यक हैं, इस जगत मे मातृत्व शकती ही सृजनात्मक शकती हैं, कोई कार्य इस शकती के बीना सकारात्मक रूप से होना असंभव हैं, क्योकी यह अधीकार इस जगत मे प्रत्येक स्त्री को दिया हुआ हैं, इसका संपूर्ण एहसास मुझे मेरे जिवन मे हुआ हैं, और वही एहसास आप को भी इस अनुष्ठान मे हो यही प्रभु से प्रार्थना हैं,
मैं प्रभु से प्रार्थना करता हु, की आप इस अनुष्ठान के पवीत्र समय मे संगठित हो और एक बडी सामुहीकता की शकती बन जाये, तो ही मानव जाती का नवनिर्माण हो सकता हैं, आपकी दशा अच्छी नही हैं, और इसी कारण समाज पिछडा हुआ हैं, आप सोच रही होगी की मैं कौनसे जमाने की बात कर रहा हु, मैं किसी पुराने जमाने की बात नही कर रहा मैं इसी जमाने की बात कर रहा हु, केवल इतनी इतनी का फरक हैं, आपकी इतनी संकुचीत हैं, इस लीये आपको लग रहा हैं, की आज स्त्री पिछडी नही हैं, लेकीन मेरी इतनी बडी व्यापक हैं, और आज भी गांवो मे, छोटे शहरो मे स्त्रीया अभी भी पिछडी ही क्या होता हैं, जो शहर की स्त्री विकसीत होती हैं, तो वह गलतफहमी का शिकार हो जाती हैं, सारी स्त्रीया ही विकसीत हो गयी हैं और वह शहर की स्त्री स्त्रीयो के विकास की ओर ध्यान नही देती हैं,

इस प्रकार जो स्त्री विकसीत होती है, वही स्त्री की सामुहीकता से अलग हो जाती है, वास्तव मे जो स्त्री विकसीत है, उसने परमात्मा को धन्यवाद देना चाहिये की मुझे उसने विकसीत होने का अवसर दिया और परमात्मा को प्रार्थना करना चाहिये की अन्य स्त्रीया भी विकसीत हो,

आप विकसीत हो कर स्त्रीयो से अलग अगर रहलोगी तो उन्हे विकास का अवसर कौन देगा और अगर विकसीत स्त्रीया ही संगठन मे नही रही तो "स्त्री संगठन" विकसीत कैसे होगा. सभी स्त्रीया इतनी भाग्यवान नही होती की उन्हे उनके जिवन मे विकसीत होने का अवसर मिले इस लिये अगर वह भाग्यवान स्त्री है, आप माध्यम बनीये उन स्त्रीयो को विकसीत करने के लिये, जो विकसीत स्त्री है, वह अगर अंहकार से स्त्री शक्ती से आगे जायेगी तो वह स्त्री शक्ती की सामुहीकता मे नही रहेगी और अगर मै दिन हिन हु, ऐसा समझ कर वह स्त्री शक्ती की सामुहीकता से दुर रहेगी, तो भी वह अलग पिछे ही रह जायेगी, इसलीये जब तक आप सामुहीकता मे नही आती स्त्री शक्ती संगठन विकसीत नही हो सकता है, और जब तक आपकी प्रगती नही होती तब तक समाज की प्रगती संभव ही नही है, आप को भगवान ने सृजन शक्ती और वितरण की शक्ती जन्म से ही दी है आप नयी शक्तीयो का सृजन कर सकती है और बांटना आप का मुल स्वभाव है आप को बांटने मे ही समाधान मिलता है यह सब बाते आप के समझ मे नही आयेगी, क्योकी आपका चित्त आप के भितर ही नही है

इस लिये सर्वप्रथम आवश्यक है। आप पहले अपने आप को ही जाने तो अधीक अच्छा होगा क्योंकी जैसे ही आपका चित्त भितर की ओर जायेगा आपको आपके भितर की इन शक्तीयो की संपदा का पत्ता चलेगा।
यह भितर जाने का मार्ग ही "समर्पन ध्यान" है। इससे आप आपकी ही गुरु बन जायेगी, और अपने आप को जान जायेगी, आप जिवन भर अपना नियत्रंण पिता के हाथ मे, बाद पती के हाथ मे, फीर पुत्र के हाथ मे देती है। आप आपका नियत्रंण अपने हाथ मे कब लेगी, और इन तीनो मे स्त्री कोई भी नही है याने स्त्री की सामुहीकता तो आपको कही नही मिली आप थोडा समय स्वंयम अपने लीये दिजीये, यह जब तक नही देती आप अपने आप को जान ही नही सकती है परिवार मे भी आप का बडा महत्व है किसी परिवार का पुरुष जल्दी चला जाये कोई बडा अंतर नही पडता माता ही पिता की भी भुमीका निभा लेती है पर किसी परीवार मे स्त्री जल्दी जाये तो सारा परिवार ही बिखर जाता है तुम तो मोती की माला का वह धागा हो जब रहता है तो उसका अस्तीत्व का पता नही चलता है लेकीन जब टुट जाता है तो जब सारे मोती बिखर जाते है, तब पता चलता है की माला मे एक धागा सुक्ष्म रुप मे था और वही सारे परीवार के मोतीयो को बांधे हुये था। तुम्हारी भुमीका छुपी है, लेकीन परिवार के पुरी माला का वजन तुम्हारे ही स्कंदो पर है इसका अहसास परिवार को भले ही न हो मुझे है, इस लिये मै चाहता यह धागा अधीक से अधीक मजबुत तो शक्तीशाली हो, ताकी परिवार को वह सुरक्षा दे सके।

(4) Date

और जो धागा दिखता नही है। उस की ओर
प्रायः किसी का भी ध्यान नही जाता है और
मेरा कार्य है। जिसकी ओर किसी का ध्यान
नही जाता मैं उसीका ध्यान रखता हु। क्योंकी
यही कार्य परमात्मा ने मुझे सौंपा है
आप और मैं समकुरवी: है। दोनो का ही कार्य
दिखता नही है। मेरा भी कार्य सुक्ष्म रूप मे होते
रहता है। पर वह दिखता नही है। आप सोचिये
"समर्पण ध्यान" का कार्य विश्वस्तर पर हो रहा
है। पदाधीकारी आते है। और जाते है। लेकीन
जो सुक्ष्म रूप मे कर रहा है। वह दिखता
नही और न कभी जिवीत रहते दिखेगा।
इसलीये यह कार्य करने के लीये मैं भी पर्याप्त
समय निकालता हु। क्योंकी मैं जानता हु, यह
समय जितना मिलेगा उतना ही सुक्ष्म रूप मे गुरुकार्य
अधीक होगा। और जो मैं कर रहा हु वही
मैं आपको भी बता रहा हु। आप अपने आप
को समय दिजीये और सुक्ष्म रूप से मेरे साथ
गुरुकार्य मे लगीये, आप भी सशक्त होंगे
और आपका परिवार भी सशक्त होगा। जैसा
मेरा परिवार विश्वस्तर हुआ है यह मेरा निजी
अनुभव है मैंने तो अनुभव कर के देख लीया
अब आप भी अनुभव कर के देखे, अब और
क्या लिखु आप अब तक अब कुछ समझ
ही गये होंगे, की आत्मीक विकास ही विश्व का
विकास कर सकता है आप सभी को खुब खुब
आर्शिवाद —

आपका
बाबास्वामी
25/1/2009